सद्गुरु तत्व बोध
SADGURU TATV BODH

नई दिल्ली
अंक – 163

www.saikalpadhyatmsanstha.com

श्री साई शक : 36
मार्च–2018

॥ ॐ श्री साईनाथाय नमः॥
॥ ॐ श्री सदगुरूनाथ दादाय नमः॥

श्री हाजी मलंग बाबा

गुरूबंधुभगिनियों से

सूर्य के प्रकाश जैसा निर्मल जीवन ईश्वर की प्रेरणा से लोगों के लिए व्यतीत करना और लोगों के जीवन में पूनम की निरंतर शीतल चांदनी जैसी प्रेम भावना उत्पन्न करने वाली पुण्यविभूति मतलब हाजी बाबा जो पाँच पीर श्री दादा जी के मानवीय कल्याण और मानवताधर्म के कार्य में अखंड सहभागी (शामिल) हुए, उन विभूतियों में अग्रसर विभूति जो है वह 'हाजी मलंग बाबा' अन्य विभूतियों के नाम, गाँव, कार्य गुरु इन सबके बारे में जानकारी उपलब्ध है। लेकिन हाजी मलंगबाबा के बारे में केवल अख्यायिका है। इसलिए जब हाजीबाबा के नाम का उच्चारण होता है तब उनकी शक्ति की अनुभूति होती है। वैयक्तिक धर्म के बजाए मानवता धर्म की प्रचिति हमें होती है। हाजी मलंग बाबा मतलब सूर्य की किरणों की तरह निर्मल और पूरणमासी की चांदनी की तरह शीतल प्रेम। जब श्रीदादाजी को प.पू. हाजी मलंग बाबा का संचार होता था तब, सभी भक्तभाविकों को उनके दिव्य प्रेम की प्रचिती का अनुभव मिलता था। इसी वजह से भक्तों को मलंग बाबा अपने माता पिता से भी अधिक अपने लगते थे।

श्री हाजी मलंग बाबा का दर्गा कल्याण के पास मलंगगडपया है। इस स्थान को 'अमरपर्वत' भी कहते है। यह नाथों की दीक्षाभूमि है। यहाँ दीक्षा प्राप्त करके अमरनाथजी ने जिस प्रमाण में काम किया है उसे आज भी 'अमरनाथ' नाम से जाना जाता है। मलंगगडपया अथवा अमरपर्वत यह जगह नाथों की दीक्षा भूमि होने की निशानियाँ (सबूत) आज भी वहाँ देखने को मिलती है।

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com

Patron
Anand Bapshet

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Soni Printers
Cell : 09718657567

Published Every Month

©All rights reserved with Publisher

इस गडपर श्री गणेश, श्री मारुति, श्री शिवमंदिर और श्री देवी मंदिर ऐसे अनेक मंदिर है।

इस जगह तीन यात्राऐं होती है। जैसे दीवाली पाड़वा, दूसरी माघ शुद्ध पौर्णिमा। (इस दिन श्री दत्तगुरु के सोलह अवतारों में से 14 वां अवतार 'सिद्धराज' इस माधी पूर्णिमा को प्रकट हुए और श्री मच्छिंद्रानाथ जी को भी मच्छिंद्रदत्त ही कहते है। इसलिए यह उत्सव माधी पूर्णिमा को ही होता है। तीसरा उत्सव फाल्गुन पूर्णिमा को होता है। इन उत्सव को सभी कोंकणवासी और कोली बांधव (fishermen community) आते है। ऐसा कहा जाता है कि इस्लाम धर्म के संस्थापक श्री मोहम्मद पैंगबर जी ने साधारण (सर्वसामान्य) जनता के नीतिमत्ता पालन के लिए 'कुरण' ग्रंथ लिखा।

मोहम्मद पैगंबर साहब जब समाधि अवस्था में रहते थे, तब उन्हें ईश्वरी प्रेरणा (हदीस) प्राप्त होती थी।

एक बार श्री मोहम्मद पैगंबर साहब, श्री मच्छिंद्रनाथ और श्री गोरक्षनाथ जी की मुलाकात अरणस्तान में हुई। श्री मोहम्मद पैगंबर जी ने उन्हें न समझ में आए हुए हदीसों के (ईश्वरी प्रेरणा) अर्थों के बारे में नाथों से चर्चा की। श्री नाथ जी ने श्री पैगंबर जी को उन हदीसों का अर्थ समझाया, तब श्री पैगंबर जी ने नाथों को विनती की, यह ज्ञान श्री नाथ ने मुसलमानों को भी बताए। कई इस्लामिक कट्टर धर्मवादी लोगों ने कहा कि नाथों को यह कार्य मुसलमान पेहराव करके ही करना चाहिए। नाथों ने मुसलमान पेहराव करके प.पू. हाजी मलंगजी के रूप में मलंगगड़ से अपने कार्य की शुरुआत की। इसलिए नाथों का यह स्थान शक्तिस्वरूप और धर्मातीत है। (Dharmateet – Sanskrit term means you need not follow any particular type of religion and can take essence of all the religions) आज भी मलंगबाबा की दर्गा के शिखर पर नाथपंथों का निशान (त्रिशुलांकित मत्स्थ) है। मच्छिंद्रानाथ जी का जन्म मछली के पेट से हुआ था। इसलिए त्रिशूलांकित मत्स्य नाथों की निशानी है। माधी उत्सव के तीन चार दिन पहले मलंगगड़ पर झंडा फहराया जाता है। शक्कर चावल का प्रसाद चढ़ाया जाता है। इस दिन पुजारी रुद्राभिषेक करते है और उत्सव की शुरुआत होती है। पौर्णिमा के दिन मलंगगड़पर सनई की गुंज रहती है। वातावरण प्रसन्न होता है दो दिन पहले से ही भक्तगण बड़ी संख्या में मलंगगड़ पर आते है इसलिए इस दिन एक बात की खबरदारी लेते है कि दर्गा के सामने किसी की बली नही दी जाती।

उत्सव के मुख्य दिन को 'संदल' कहते है। संदल मतलब 'चंदन'। इस दिन समाधि को चंदन, अष्टगंध का लेपन किया जाता है। यह विधि पारंपारिक पुजारी श्री केतकरजी के घर में बड़ी श्रद्धा और आपुलकी से किया जाता है। गंगाजल से समाधि स्नान करते है और बाद में उसे अष्टगंध का लेपन किया जाता है। गंध लेपन के पहले चांदी के बड़ी पालकी से जुलूस निकलता है। 'मलंगबाबा की जय' का जयघोष होता है। ढोल–लेझीम के साथ बडे जल्लोष से भक्तगण गड़ चढ़ते है।

रात को 10:30 बजे पालकी का जुलूस निकलता है। पालकी उठाने का मान पुजारी श्री केतकरजी का होता है। उस समय उनके माध्यम से नाथ जी का संचार होता है। उसके बाद ध्वजस्तंभ को प्रदक्षिणा करके पालकी समाधि मंदिर से विश्राम कट्टा की ओर जाती है। इसके बाद आखीर तक पालकी उठाने का मान तळोजे गाँव के कोली बांधवों को होता है। मच्छिंद्रनाथ जी का पालन पोषण कोली (fishermen) ने किया था। इस वजह से यह सम्मान उन्हें दिया जाता है। पालकी वापस आने पर सर्वप्रथम श्री केतकर जी चंदन लेपन करते है। पुराने समय में पूरी समाधि

को गंध लेपन होता था, परन्तु अब समाधि मार्बल से ढकी हुई है, इसलिए जो खुली जगह रखी है। (9 इंच x 9 इंच) उस जगह से समाधि को गंध लेपन किया जाता है। इसके बाद समाधि पर सात वस्त्र अर्पण करते है। समाधि पर फूलों की चद्दर, हार, अत्तर अर्पण करते है। धूप दिखाते है। इसके बाद मंदिर (दर्गा) दर्शन के लिए खुलते है।

मुख्य समाधि के बाद श्री जालंदरनाथ और श्री कानिफनाथ जी की समाधि को भी गंध लेपन किया जाता है। लोग इन समाधियों को क्रमशः सुल्तानशा और बख्तावरशा के नाम से जानते है। इन उत्सव के दिनों में मलंगगड़ पर जो गणपती मंदिर, श्री मारूति, श्री शिव मंदिर और श्री देवी मंदिर में भी पूजाअर्चा होती है।

उत्सव के दिनों में और एक महत्वपूर्ण विधि होती है और वह 'पीरी' बिठाना। इसका मतलब दीक्षा देना। नाथपंथ में हाजी मलंग दगी यह स्थान का महत्व मतलब दीक्षा गादी।

यह स्थान नाथों का है इसका खुलासा आज भी होता है। आज भी श्री नाथ प्रभू श्री मोहम्मद पैगंबर जी को दिए हुए वचन के अनुसार वेष बदलकर मलंगड पर मानवता धर्म और सर्वधर्म समभाव का संदेश देते है।

हाजी मलंग बाबा इस नाम मेरी ईश्वरी प्रेरणा की कृपा है। 'हाजी' मतलब हज–मक्का यात्रा करके आया हुआ। मक्का–मदीना इस्लाम धर्म का पवित्र धर्मक्षेत्र है। हाजीबाबा ने संपूर्ण जीवन में अखंड धर्माचरण किया और ईश्वरी शक्ति से एकरूप हो गए। धर्म, जाति, लिंग, श्रीमंत–गरी जवान–बूढ़ा यह भेदभाव न करते हुए, सिर्फ मानवता धर्म का विचार करके मानव की सेवा श्री दादा जी के माध्यम से की और श्री दादा जी के कार्यपूर्ति के लिए पूरी तरह मदद की। इसलिए मलंगबाबा के बारे में यह प्रसिद्ध है कि वह ईश्वरी शक्ति से पूर्णतः एकरूप हुई विभूति है।

मलंग मतलब ब्रह्मचारी अथवा मलय अंग मतलब जिससे चंदन का सुवास (खुशबू) होता है। जिस प्रकार चंदन खुद घीसने पर दूसरों को खुशबू (आनंद) देता है, उसी तरह हाजी बाबा ने अपने भक्तों को ईश्वर समझकर उनकी निरामय सेवा की, उन्हें ब्रह्मज्ञान और ब्रह्मशक्ति का आनंद दिया। वह मातृ–पितृ प्रेम और कर्त्तव्य का प्रतीक है। 'मलंग बाबा प्रेमसार' आरती यही व्यक्त करती है। जब श्री दादा को हाजीबाबा का संचार होता था तब भक्तों को ईश्वरी प्रेम का अनुभव आता था। भक्त और गुरु की अवस्था 'ज्योत से ज्योत जलाते चलो, प्रेम की गंगा बहाते चलो' ऐसी होती थी।

भक्त भाविक जब हाजीबाबा की दर्गा में जाते है और उनके मझहारपर नतमस्तक होते है, तब हाजीबाबा उन्हें कहते है कि, 'अगर आत्मिक तत्व को कृपाशीर्वाद की साद्य मिले तो समूल देहिक दुख नष्ट हो जाते हैं। हाजीबाबा की मज़ार पर दिन के अंत में एक सफेद वस्त्र का टुकड़ा पहनाया जाता है। इसको 'किस्मतकी चद्दर' कहते है। क्योंकि गुरुकृपाशीर्वाद इस चद्दर की तरह है, जिसे सदैव हृदय में धारण करना चाहिए। श्री मलंग बाबा के मार्गदर्शन से श्री दादाजी ने कृपाशीर्वाद और प्रेम इन ईश्वरी तत्वों पर ही कार्य खड़ा किया। इस कार्य के महती के बारे में एक बार हाजीबाबा ने कहा था कि, 'आत्मा एक ही है, इस तत्व के अनुसार यह कार्य मानवीय सहिष्णूतावाद निर्माण करने का कार्य कर रहा है। इसमें भक्तों को यह समझाना चाहिए कि देवदेवताओं का आशीर्वाद संकटनिवारण के लिए ना होकर वह सत्कर्म प्रवृत्ति के लिए है। अगर भक्त का आचरण सत्कर्म के अनुसार हो तो उनके पातक–प्रमादों का विमोचन जल्दी होता है। इस प्रकार अगर मानव को विकास का मार्ग आपने दिखाया तो भक्तिहीन, भावहीन, निष्ठाहीन, सबुरीहीन

आदमी को अपनाकर उसमें स्फूर्तभावना उत्पन्न होने तक, आपने सेवा की तो ही मेरे कृपाशीर्वाद का ज्ञान आपको होगा और यह कार्य जगत में 'मानवीय कल्याण का प्रतीक' के नाम से जाना जाएगा।''

भक्तों की इच्छापूर्ति, उनका रक्षण और दुख निवारण यह श्री हाजीबाबा का ब्रीद(नारा) था। ऐसे प्रेम सागर हाजीबाबा का आगमन श्री दादा जी के कार्य में उनके औदुंबर के वास्तव्य में हुआ। बचपन में श्री दादा जी को उनके पिता जी ने 'फकीर' किया था। वह एक प्रकार की दीक्षा थी। श्री दादा जी के पिता परमार्थ के ज्ञानी और सूज्ञ पुरूष थे। उनको प्रेरणा हुई जिस वजह से उन्होंने फकीरी की दीक्षा श्री दादा जी को दी। इस वजह से श्री दादा जी के कार्य में सूफी विभूतियों का संचार सहजता से हुआ। श्री दादा जी ने 12 वर्षों तक फकीरी की।

मोहर्रम महीने में दस दिन तक 'ताबूत' बिठाते थे ताबूत विसर्जन करने की पिछली रात (Previous Night) को 'कत्ल की रात' होती हैं दादा जी के पिता यह विधि मुसलमान धर्म के अनुसार करने के लिए दादा जी को लेकर जाते थे। क्योंकि 'परमेश्वर एक है' और जिसने भी प्रार्थना की तो उसका लाभ पूरे जगत को मिलेगा' यह उनकी धारणा थी। इस दिन कई फकीर भिक्षा मांगते थे। भिक्षा मांगते समय वह कहते थे, '' दिया उसका भला, न दिया उसका भी भला। खुदा, जिसने दिया तांबे का पैसा उसको दे तूँ सोने का पैसा। बारा इमाम तुम्हारा भला करेंगे। खाली पाँच इमाम को याद करो। पाँच पीर दुनिया को संभालने वाले है।'' तब श्री दादा जी को इन पाँच पीरों का कार्य से क्या संबंध है उसका पता नहीं था। लेकिन आगे कार्य करते समय उन्हें समझा कि यह पाँच पीर मतलब पाँच विभूति, पाँच कोष, पाँच ऋणानुबंध और ॐकार।

वंदनीय दादा जी श्री साईनाथमहाराज की सेवा करते समय और भक्तों को उनका मार्गदर्शन करते समय एक दिन शाम को उनके पास एक फकीर आया और बोला, ''ओ साईबाबा के भक्त नीचे आ जाओ।'' जब वंदनीय दादा जी नीचे आए तो उस फकीर ने दूध मांगा और दूध प्राशन कर चला गया। उस दिन दादा जी को एक सपना आया। उसमें एक बहुत बड़ा पर्वत, उसके ऊपर एक दर्गा और एक फकीर वह पर्वत चढ़ रहा है ऐसा दृश्य दादा ने देखा। जब वह फकीर वह दर्गा तक पहुँचा तो उसने पीछे मुड़ कर देखा और कहा, ''हम यहाँ रहते है।'' दादा जी नींद से उठे और उन्होंने हाथ जोड़कर प्रार्थना की पर उस दृश्य का अर्थ उन्हें समझ में नहीं आया।

जब दादा जी को श्री साईनाथ महाराज ने श्रीक्षेत्र औदुंबर जाने की आज्ञा की तब वहाँ जाकर क्या कार्य करना है इसकी जानकारी वं. दादा जी को नहीं थी। पहले दिन अभिषेक करके जब दादा जी आरती के लिए खड़े हुए तब उन्हें श्री हाजी बाबा के दर्शन हुए। वही सफेद दाढ़ी, कफनी, स्फटींकों की माला और हाथ में छड़ी (curved stick) दादा जी जब बैठ गए तब उन्हें कुछ शब्द सुनाई दिए। ''इन्सान जाग उठा। अपना काम हो गया। इन्शाह अल्लाह।'' यह सूफी विभूतियों का कार्य के लिए दादा जी के रूप में सर्वोत्तम माध्यम मिलने का आनंद था। इस घटना के बाद वंदनीय दादा जी को सेवा के बारे में मार्गदर्शन हुआ और आगे भी होता रहा। प.पू. हाजीबाबा का श्री दादा जी और श्रीसाईनाथ महाराज की कार्ययोजना में प्रथम प्रवेश हुआ था।

।। शुभं भवतु।।